JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य

डॉ. शिवाली शाक्या, सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य

शासकीय श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

शोध सारांश-

भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक विषय के रूप में कई प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में शामिल किया गया है।इस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी जोर दिया गया है । इसी क्रम में भारतीय व्यापार प्रणाली को भी अकादमिक जगत में महत्व देने की आवश्यकता है।आज संपूर्ण दुनिया में, लोग भारत के सांस्कृतिक परिवेश तथा प्राचीन समय से प्रचलित व्यापारिक प्रणाली को जानने के उत्सुक हैं।भारतीय व्यापार प्रणाली का संबंध देश में प्रचलित औपचारिक तथा अनौपचारिक व्यापारिक पद्धतियों से हैं।दुनिया में लगभग सभी देशों की व्यापार प्रणाली में विविधता पाई जाती है और इसका प्रमुख कारण संबंधित देश का राजनीतिक,सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य होता है।अलग–अलग देश में पाए जाने वाली विविधता के कारण व्यापार प्रणाली भी प्रभावित होती है ।भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता तथा विरासत के लिए जाना जाता है।हमारे देश की व्यापार प्रणाली की कई विशेषताएं हैं।सतत विकास एवं सामाजिक जिम्मेदारी की अवधारणा भारतीय व्यापार में प्राचीन समय से ही पाई जाती है ऐसे में भारतीय व्यापार प्रणाली के अध्ययन से इनको दुनिया भर में विभिन्न स्वरूपों में प्रयोग किया जा सकता है।बहुमूल्य धातुओं जैसे- सोने में निवेश का अत्यधिक चलन, विदेश में कार्यरत भारतीय द्वारा अपने परिजनों को लगातार भेजे जाने वाला धन,सतत विकास की अवधारणा,दान,सामाजिक जिम्मेदारी आदि भारतीय व्यापार प्रणाली की विशेषताएं हैं।जहां तक भारतीय व्यापार प्रणाली के अध्ययन तथा उस पर शोध करने की बात है,तो इसके कई महत्वपूर्ण कारण है।भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और यह वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे में भारतीय व्यापार प्रणाली की समझ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संभावनाओं को बढ़ाने में कारगर सिद्ध होगी। और भारतीय व्यापार प्रणाली का ज्ञान अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों और व्यापारियों के लिए निवेश व सांझेदारी में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली का उपयोग कर वैश्विक स्तर पर वाणिज्य में अधिकतम सफलता प्राप्त की जा सकेगी।

परिचय-

प्राचीन समय से ही भारत,वाणिज्य संबंधी कार्यों में बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है।प्राचीन आर्यों की आर्थिक अर्थव्यवस्था का पता वैदिक साहित्य से ही लगता है।वैदिक साहित्य से ही द्रविड तथा आर्य लोगों ने मिस्र और बेबीलॉन से व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए। ईसा मसीह के सैकड़ो वर्ष पूर्व से ही भारत में शिल्प और वाणिज्य का सर्वांगीण विकास हुआ है।उस समय के विदेशी यात्रियों ने भी भारत के उन्नत उद्योग धंधे और वाणिज्य की बहुत प्रशंसा की है ।प्राचीन समय से ही वाणिज्य या व्यापार दूसरे देशों से किया जाता रहा है ।भारत से कई वस्तुओं का समुद्री माध्यम से व्यापार किया जाता रहा है। मुगल काल में भी भारत के गृह उद्योग उन्नत दशा में थे और एशिया, यूरोप, अफ्रीका के अनेक देशों में भारत से तैयार माल जाता था ।संसार के कई देश तो केवल भारत के वस्त्र पर ही निर्भर करते थे । वस्त्र के अतिरिक्त मोती, मूंगा ,हाथी दांत, मसाले, सुगंधित द्रव्य इत्यादि का भी खूब व्यापार होता था। पौराणिक कथाओं के अनुसार पोसीडॉन् वाणिज्य के जनक हैं।वह समुद्र के देवता है और उस पर व्यापार करते थे इसलिए उन्हें वाणिज्य के पिता के रूप में जाना जाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का वाणिज्य में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारत को समझना है अर्थात पूर्व युगों में व्यवसाय कैसा होता था।व्यवसायी , व्यापार करने हेतु कैसी पद्धति अपनाते थे। भारत देश विविधताओं का देश है। भारत में अलग–अलग भाषा,संस्कृति,प्राकृतिक विविधता,भौगोलिक परिस्थितियों में अंतर व अलग–अलग जाति और समुदाय के लोग पाए जाते हैं। अलग–अलग देश में पाए जाने वाली इसी विविधता के कारण व्यापार प्रणाली भी प्रभावित होती है । भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता और विरासत के लिए जाना जाता है। हमारे देश की व्यापार प्रणाली में कई विविधता हैं उदाहरण के रूप में भारत में विभिन्न राज्यों में लेखा पद्धति तथा वित्तीय नववर्ष में अंतर पाया जाता है।विभिन्न जातियां, विशिष्ट व्यवसाय से संबंधित रहती हैं और इन सभी का प्रभाव व्यापारिक प्रणाली पर पड़ता है अर्थात् व्यापार करने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली का ज्ञान होना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रयोग हर व्यवसाय में किया जाता है एवं इसका उपयोग कृषि,पशुपालन,बागवानी,उद्यमशीलता आदि में रोजगार की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगा।इसके साथ ही भारतीय ज्ञान का उपयोग कर व्यक्ति किसी भी देश में जाकर वहां की भाषाओं को सीख कर अपना व्यवसाय कर सकता है ।

भारतीय ज्ञान प्रणाली में कला,साहित्य,वेद,पुराण,कला, प्राचीन नीतियां, उपनिषद, भारतीय लिपियां, पांडुलिपियाँ एवं गीता,महाभारत,रामायण आदि का अध्ययन शामिल है । भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य भारत की प्राचीन परंपराओं और ज्ञान को पुनर्जीवित करना है । भारत के पास अपार ज्ञान भंडार है जिसकी कई पांडुलिपियाँ अभी भी खोजी जाना बाकी है।भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से कैरियर,नौकरी,पेशेवर व्यवसाय,अनुसंधान,सामाजिक व सांस्कृतिक अवसर की खोज की जा सकती है ।

कीवर्ड्स - करियर, पेशेवर व्यवसाय,अनुसंधान, सामाजिक व सांस्कृतिक अवसर की खोज ।

शोध अध्ययन के उद्देश्य -

01.भारतीय ज्ञान परंपरा का वाणिज्य के लिए महत्व को जानना ।

02. भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर करियर के अवसर खोजना ।

भारतीय व्यवसाय को जानने की आवश्यकता –

हम भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग कर भारतीय व्यवसाय को जान सकते हैं कि पहले व्यापार कैसे किया जाता था।जब गांव में अधिक मुद्रा का चलन नहीं था या वहां के ग्रामीण अशिक्षित होने के कारण वस्तु विनिमय को अपनाते थे अर्थात् एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का आदान प्रदान करके व्यापार किया जाता था। प्राचीन समय में जिन वेद, पुराण, महाभारत,रामायण आदि का जिक्र होता है उससे व्यवसाय एवं उसकी रणनीति ज्ञात होती है साथ ही प्रबंधन की श्रेणियां भी प्रदर्शित होती है एवं एक संगठन को भी इन सभी के माध्यम से समझा जा सकता है जैसे चाणक्य नीति में प्रबंधन से संबंधित कार्यों को बताया गया है।संत तुकाराम गाथा में एवं उसके अभंग में सामाजिक उद्यमिता को दर्शाया गया है । रामायण, महाभारत आदि व्यावसायिक नैतिकता , संकठनात्मक व्यवहार, व्यावसायिक अर्थशास्त्र एवं मानवीय संसाधन से संबंधित है । पंचतंत्र की कहानियाँ कॉरपोरेट कल्चर से संबंधित होती हैं । तेनाली रामा की कहानियाँ व्यावसायिक अर्थशास्त्र एवं प्रबंधकीय निर्णय कौशल से संबंधित है । महाभारत मानवीय संसाधन प्रबंधन जैसे- नैतिकता,नवीन सोच,कार्य का विभाजन,महिला सशक्तिकरण जन संबंध आदि को दर्शाता है अर्थात् यह सभी वाणिज्य के महत्वपूर्ण अंग है इन सभी का व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदान है । इन सभी का ज्ञान हासिल करके हम अपनी व्यवसाय को ऊंचाइयों तक पहुंचा सकते हैं ।

भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र -

भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन करने से हमें उपरोक्त सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है।यह सभी व्यवसाय के ही महत्वपूर्ण पहलू है उनके ज्ञान के बिना हम अपने व्यवसाय को सफल नहीं बना सकते है ।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से रोजगार के अवसर -

- व्यापारिक एवं व्यवसायिक अवसर ।
- सामाजिक सांस्कृतिक एवं नेटवर्किंग के अवसर ।
- कॉर्पोरेट अवसर ।
- सेना,सिविल सेवा, विदेश सेवा के अवसर ।
- अनुसंधान के अवसर ।
- करियर एवं रोजगार के अवसर ।
- आईकेएस संकाय शिक्षक आईकेएस विशेषज्ञ के रूप में अवसर ।
- प्राचीन भारतीय खेल में अवसर ।
- नृत्य ,संगीत, कला, शिल्प विनिर्माण में अवसर आदि ।

निष्कर्ष –

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से खुद को पुनर्जीवित करने की भारत की यात्रा देश में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए तैयार है ।भारत अपनी समृद्धि,सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान परंपराओं को अपना कर भारत ब्रिटिश शासन की विरासत पर काबू पा सकता है और एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में अपना सही स्थान हासिल कर सकता है । भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा निर्देशित शिक्षा क्षेत्र का परिवर्तन इस पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा जिससे मानसिक स्वतंत्रता और वैदिक सशक्तिकरण के एक नए युग की शुरुआत होगी और समाज व देश में व्यापार के नए अवसर का सृजन होगा एवं वैश्विक व्यापार व वाणिज्य को भी प्रोत्साहन मिलेगा ।जैसे–जैसे भारत प्रगति करेगा उसके प्राचीन ज्ञान को व्यावहारिक अनुप्रयोग मिलेगा जिससे न केवल उसके नागरिकों को, बल्कि वैश्विक समुदाय को भी लाभ होगा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन से युवाओं के लिए भविष्य में भी करियर के कई अवसर उपलब्ध होंगे साथ ही उनमें व्यवसाय एवं वाणिज्य गतिविधियों के सफल संचालन का ज्ञान प्राप्त होगा जिससे वह अपने भविष्य में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकेंगे एवं देश के व्यवसाय को आगे बढ़ा सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

- वर्मानी डॉ. साक्षी, 2023,वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता।
- रावल मोहित ,2023 ,आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की उपयोगिता।

https://rajbhawan.rajasthan.gov.in

https://www.alliance.edu.in

https://www.egyankash.ac.in

https://www,researchgate.net

https://ashutoshpareek.com

https://erupublication.com